RECENT EDUCATIONAL & PSYCHOLOGICAL RESEARCHES
RESEARCH
Vol. : 7, Issue : 2 & 3
Jul. - Dec. (2018), Joint Edition, Pages : 36 - 40
ISSN 2278 – 5949
International Refereed & Blind Peer-Reviewed Research Journal

स्नातक स्तर के विद्यार्थियों की सांवेगिक परिपक्वता का अध्ययन 'शैक्षिक उपलब्धि' के सन्दर्भ में

गौसिया
एसोसिएट प्रोफेसर, एम0एड0 विभाग, बरेली कालेज, बरेली (उ0प्र0)

Received : 27/10/2018 *1st BPR* : 04/11/2018 *2nd BPR* : 12/11/2018 *Accepted* : 25/11/2018

ABSTRACT

प्रस्तुत अध्ययन स्नातक स्तर के विद्यार्थियों की सांवेगिक परिपक्वता पर शैक्षिक उपलब्धि का प्रभाव जानने हेतु किया गया है। अध्ययन हेतु बरेली जनपद के महाविद्यालयों में स्नातक स्तर पर अध्ययनरत् 100 विद्यार्थियों का चयन किया गया है। विद्यार्थियों की सांवेगिक परिपक्वता के मापन हेतु डॉ0 यशवीर सिंह तथा डॉ0 महेश भार्गव द्वारा निर्मित 'सांवेगिक परिपक्वता मापनी (EMS) का प्रयोग किया गया तथा शैक्षिक उपलब्धि के मापन हेतु विद्यार्थियों द्वारा उ0प्र0 माध्यमिक शिक्षा परिषद इलाहाबाद द्वारा आयोजित कक्षा 12 की परीक्षा के कुल प्राप्तांकों को आधार माना गया है। अध्ययन के परिणाम से ज्ञात हुआ कि विद्यार्थियों की सांवेगिक परिपक्वता पर शैक्षिक उपलब्धि का प्रभाव नहीं पड़ता।

प्रस्तावना

प्रत्येक राष्ट्र बच्चों को अपनी अमूल्य, सम्पदा मानता है, क्योंकि भविष्य में यही बच्चे अनुशासित चरित्रवान, कर्तव्यनिष्ठ व जागरूक नागरिक बनकर देश के नव–निर्माण एवं विकास में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं यदि हम बच्चों के अधिकारों को संरक्षित करते हुए उन्हें विकास के समुचित अवसर प्रदान करें, तो वे निश्चित ही भविष्य में एक उत्तरदायी नागरिक के रूप में अपने देश की सेवा करने के लिए तत्पर रहेंगे। उपर्युक्त वास्तविकता का भली–भाँति ज्ञान होते हुए भी हमारे समक्ष यह दुर्भाग्यपूर्ण समस्या निरंतर अपना अस्तित्व बनाए हुए है कि देश के हजारों–लाखों बच्चे, बालश्रम, वेश्यावृत्ति व बाल भिक्षावृत्ति जैसे कई रूपों में उत्पीड़न, उपेक्षा व शोषण के शिकार बनते जा रहे हैं। इसके पीछे प्रमुख उत्तरदायी कारण यह है कि बच्चों में पर्याप्त समझ व परिपक्वता का अभाव होता है और साथ ही अनुचित कार्यों का प्रतिरोध करने की क्षमता नहीं होती। किशोरावस्था मे बालकों के सम्मुख विविधि समस्याएं उत्पन्न होती है। जिनमें संवेगात्मक समस्याएं उनके व्यवहार एवं उनकी उपलब्धि को आश्चर्यजनक रूप से प्रभावित करती हैं। सांवेगिक अपरिपक्वता ऐसी समस्या है जिससे यदि व्यक्ति निजात नहीं पाता तो वह अपने जीवन में लक्ष्य को प्राप्त नहीं कर पाता है। अतः इसका सीधा प्रभाव बालक के शैक्षिक क्रिया–कलापों पर पड़ता है। इन सभी बातों को अनुभव करते हुए ही शोधार्थी ने स्नातक स्तर के किशोरों की सांवेगिक परिपक्वता पर शैक्षिक उपलब्धि का प्रभाव जानने का प्रयास किया है।

अध्ययन की आवश्यकता एवं महत्व

वर्तमान समय तकनीकी का युग है। इसमें दिनभर किसी न किसी यान्त्रिक वस्तुओं से विद्यार्थी का सामना होता है। वह इनसे काफी कुछ सीखता है परन्तु साथ ही साथ विद्यार्थी कई समस्याओं–चिन्ता, थकान, उदासी आदि का सामना करता है जो उसकी सांवेगिक परिपक्वता पर नकारात्मक प्रभाव डालते हैं। सांवेगिक रूप से परिपक्व बालक विद्यालय, समाज, देश के लिए उपयोगी होता है जबकि अपरिपक्व बालक विघटनकारी साबित होता है। अतः बालकों की सांवेगिक परिपक्वता का अध्ययन करना आवश्यक है। प्रस्तुत शोध न केवल शैक्षिक दृष्टि से महत्वपूर्ण है, वरन् सामाजिक उत्थान की दृष्टि से भी महत्वपूर्ण है। प्रस्तुत शोधकार्य से किशोरों की संवेगात्मक परिदृश्य का पता चल सकेगा कि संवेगात्मक रूप में वे कितने स्थिर हैं? साथ ही शिक्षकों तथा अभिभावकों को भी अपने बालकों की संवेगात्मक स्थिति तथा शैक्षणिक उपलब्धि की जानकारी मिल सकेगी। प्रस्तुत शोध कार्य छात्रों, अभिभावकों, शिक्षा अधिकारियों, शैक्षिक नीति निर्धारकों के लिए मार्ग दर्शक सिद्ध होगा।

अध्ययन के उद्देश्य :–

प्रस्तुत शोध निम्न उद्देश्यों को प्राप्त करने हेतु किया गया–

- उच्च एवं निम्न शैक्षिक उपलब्धि के विद्यार्थियों की सांवेगिक परिपक्वता का तुलनात्मक अध्ययन करना।
- उच्च शैक्षिक उपलब्धि के छात्र–छात्राओं की सांवेगिक परिपक्वता का तुलनात्मक अध्ययन करना।
- निम्न शैक्षिक उपलब्धि के छात्र–छात्राओं की सांवेगिक परिपक्वता का तुलनात्मक अध्ययन करना।

RESEARCH
RECENT EDUCATIONAL & PSYCHOLOGICAL RESEARCHES
Issue : 2 & 3, Vol. : 7, Jul.-Dec. (2018), Joint Edition, Pages : 36 - 40, ISSN 2278 - 5949
गौसिया
International Refereed & Blind Peer-Reviewed Research Journal

- उच्च एवं निम्न शैक्षिक उपलब्धि के छात्रों की सांवेगिक परिपक्वता का तुलनात्मक अध्ययन करना।
- उच्च एवं निम्न शैक्षिक उपलब्धि की छात्राओं की सांवेगिक परिपक्वता का तुलनात्मक अध्ययन करना।

परिकल्पनाएँ

प्रस्तुत अध्ययन हेतु निम्नलिखित परिकल्पनाओं की रचना की गयी–

- उच्च एवं निम्न शैक्षिक उपलब्धि के विद्यार्थियों की सांवेगिक परिपक्वता में सार्थक अन्तर नहीं है।
- उच्च शैक्षिक उपलब्धि के छात्र–छात्राओं की सांवेगिक परिपक्वता में सार्थक अन्तर नहीं है।
- निम्न शैक्षिक उपलब्धि के छात्र–छात्राओं की सांवेगिक परिपक्वता में सार्थक अन्तर नहीं है।
- उच्च एवं निम्न शैक्षिक उपलब्धि के छात्रों की सांवेगिक परिपक्वता में सार्थक अन्तर नहीं है।
- उच्च एवं निम्न शैक्षिक उपलब्धि की छात्राओं की सांवेगिक परिपक्वता में सार्थक अन्तर नहीं है।

अध्ययन विधि

प्रस्तुत अध्ययन 'सर्वेक्षण विधि' को आधार मानकर किया गया है। न्यादर्श हेतु बरेली जनपद में स्थित महाविद्यालयों में से स्नातक स्तर के 100 विद्याथियों जिनमें 59 छात्र तथा 41 छात्राओं का चयन किया गया।

प्रयुक्त उपकरण

प्रस्तुत अध्ययन में विद्यार्थियों सांवेगिक परिपक्वता के मापन हेतु डॉ0 यशवीर सिंह तथा डॉ0 महेश भार्गव द्वारा निर्मित 'सांवेगिक परिपक्वता मापनी (EMS) का प्रयोग किया गया है। इस मापनी में कुल 48 प्रश्न हैं। शैक्षिक उपलब्धि के मापन हेतु विद्यार्थियों द्वारा उ0प्र0 माध्यमिक शिक्षा परिषद इलाहाबाद द्वारा आयोजित कक्षा 12 की परीक्षा के कुल प्राप्तांकों को आधार माना गया है।

प्रयुक्त सांख्यिकी

प्रस्तुत अध्ययन में आँकड़ों के विश्लेषण हेतु मध्यांक, मध्यमान, मानक विचलन तथा क्रान्तिक मान का प्रयोग किया गया है।

प्रदत्त विश्लेषण एवं व्याख्या

अध्ययन का विश्लेषण निम्न चरणों में किया गया –

चरण 1 :– उच्च एवं निम्न शैक्षिक उपलब्धि के विद्यार्थियों की संवेगात्मक परिपक्वता का तुलनात्मक अध्ययन करना।

तालिका संख्या–1

उच्च एवं निम्न शैक्षिक उपलब्धि के विद्यार्थियों की संवेगात्मक परिपक्वता का तुलनात्मक विवरण

विद्यार्थी	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	क्रान्तिक अनुपात	सार्थकता स्तर
उच्च शैक्षिक उपलब्धि	57	82ण्83	24ण्86	1ण्80	सार्थक नहीं
निम्न शैक्षिक उपलब्धि	43	92ण्22	26ण्38		

तालिका संख्या 1 के अवलोकन से स्पष्ट होता है कि उच्च तथा निम्न शैक्षिक उपलब्धि के विद्यार्थियों की संवेगात्मक परिपक्वता का मध्यमान क्रमशः 82.83 तथा 92.22 तथा मानक विचलन क्रमशः 24.86 तथा 26.38 है। दोनों समूहों के मध्यमानों की तुलना करने पर क्रान्तिक मान 1.80 प्राप्त हुआ, जो कि सार्थक नहीं है। अतः सांख्यिकीय आधार पर कहा जा सकता है कि इन दोनों वर्गों के विद्यार्थियों की संवेगात्मक परिपक्वता समान है।

आकृति संख्या 1

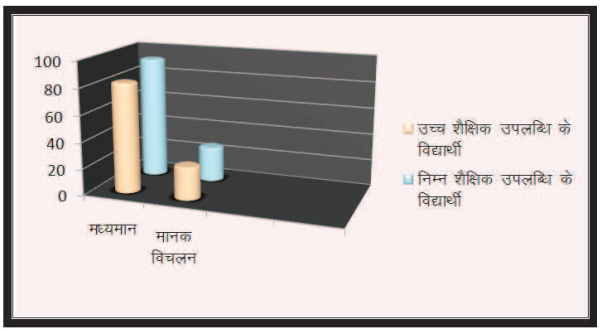

चरण 2 :– उच्च शैक्षिक उपलब्धि के छात्र–छात्राओं की संवेगात्मक परिपक्वता का तुलनात्मक अध्ययन करना।

तालिका संख्या–2

उच्च शैक्षिक उपलब्धि के छात्र–छात्राओं की संवेगात्मक परिपक्वता का तुलनात्मक विवरण

उच्च शैक्षिक उपलब्धि	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	क्रान्तिक अनुपात	सार्थकता स्तर
छात्र	34	83०57	25०83	0०59	सार्थक नहीं
छात्राएँ	23	87०33	26०82		

तालिका संख्या 2 के अवलोकन से स्पष्ट होता है कि उच्च शैक्षिक उपलब्धि के छात्र तथा छात्राओं की संवेगात्मक परिपक्वता का मध्यमान क्रमशः 83.57 तथा 87.33 तथा मानक विचलन क्रमशः 25.83 तथा 26.82 है। दोनों समूहों के मध्यमानों की तुलना करने पर क्रान्तिक मान 0.59 प्राप्त हुआ, जो कि सार्थक नहीं है। अतः सांख्यिकीय आधार पर कहा जा सकता है कि उच्च शैक्षिक उपलब्धि के छात्र–छात्राओं की संवेगात्मक परिपक्वता समान है।

आकृति संख्या 2

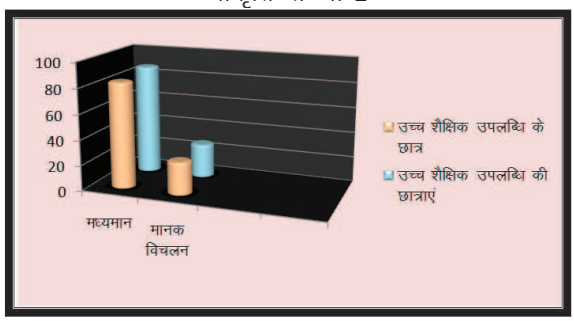

चरण 3 :– निम्न शैक्षिक उपलब्धि के छात्र–छात्राओं की संवेगात्मक परिपक्वता का तुलनात्मक अध्ययन करना।

तालिका संख्या–3

निम्न शैक्षिक उपलब्धि के छात्र–छात्राओं की संवेगात्मक परिपक्वता का तुलनात्मक विवरण

निम्न शैक्षिक उपलब्धि	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	क्रान्तिक अनुपात	सार्थकता स्तर
छात्र	25	93०65	27०22	0०25	सार्थक नहीं
छात्राएँ	18	91०57	25०65		

तालिका संख्या 3 के अवलोकन से स्पष्ट होता है कि निम्न शैक्षिक उपलब्धि के छात्र तथा छात्राओं की संवेगात्मक परिपक्वता का मध्यमान क्रमशः 93.65 तथा 91.57 तथा मानक विचलन क्रमशः 27.22 तथा 25.65 है। दोनों समूहों के मध्यमानों की तुलना करने पर क्रान्तिक मान 0.25 प्राप्त हुआ, जो कि सार्थक नहीं है। अतः सांख्यिकीय आधार पर कहा जा सकता है कि निम्न शैक्षिक उपलब्धि के छात्र–छात्राओं की संवेगात्मक परिपक्वता समान है।

आकृति संख्या 3

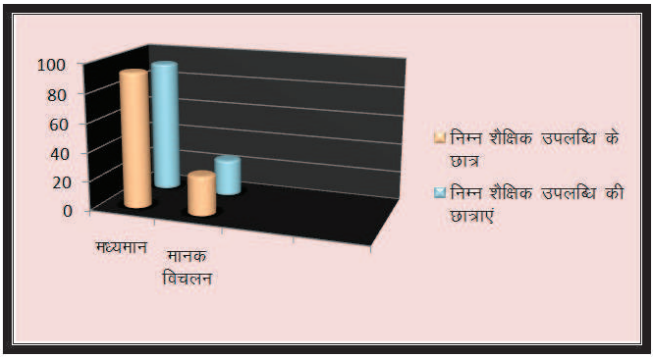

RESEARCH
RECENT EDUCATIONAL & PSYCHOLOGICAL RESEARCHES
Issue : 2 & 3, Vol. : 7, Jul.-Dec. (2018), Joint Edition, Pages : 36 - 40, ISSN 2278 - 5949
गौसिया
International Refereed & Blind Peer-Reviewed Research Journal

चरण 4 :– उच्च एवं निम्न शैक्षिक उपलब्धि के छात्रों की संवेगात्मक परिपक्वता का तुलनात्मक अध्ययन करना।

तालिका संख्या–4

उच्च एवं निम्न शैक्षिक उपलब्धि के छात्रों की संवेगात्मक परिपक्वता का तुलनात्मक विवरण

छात्र	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	क्रान्तिक अनुपात	सार्थकता स्तर
उच्च शैक्षिक उपलब्धि	34	83ण्57	25ण्83	1ण्44	सार्थक नहीं
निम्न शैक्षिक उपलब्धि	25	93ण्65	27ण्22		

तालिका संख्या 4 के अवलोकन से स्पष्ट होता है कि उच्च व निम्न शैक्षिक उपलब्धि के छात्रों की संवेगात्मक परिपक्वता का मध्यमान क्रमशः 83.57 तथा 93.65 तथा मानक विचलन क्रमशः 25.83 तथा 27.22 है। दोनों समूहों के मध्यमानों का तुलनात्मक अध्ययन करने पर क्रान्तिक अनुपात 1.44 प्राप्त हुआ, जो कि सार्थक नहीं है। अतः सांख्यिकीय आधार पर कहा जा सकता है कि उच्च एवं निम्न शैक्षिक उपलब्धि के छात्रों की संवेगात्मक परिपक्वता समान है।

आकृति संख्या 4

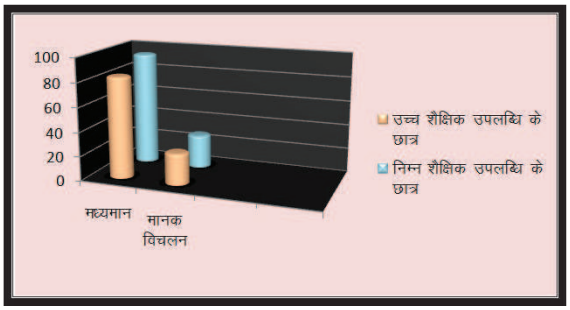

चरण 5 :– उच्च एवं निम्न शैक्षिक उपलब्धि की छात्राओं की संवेगात्मक परिपक्वता का तुलनात्मक अध्ययन करना।

तालिका संख्या–5

उच्च एवं निम्न शैक्षिक उपलब्धि की छात्राओं की संवेगात्मक परिपक्वता का तुलनात्मक विवरण

छात्राएं	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	क्रान्तिक अनुपात	सार्थकता स्तर
उच्च शैक्षिक उपलब्धि	23	87ण्33	26ण्82	0ण्51	सार्थक नहीं
निम्न शैक्षिक उपलब्धि	18	91ण्57	25ण्65		

तालिका संख्या 5 के अवलोकन से स्पष्ट होता है कि उच्च व निम्न शैक्षिक उपलब्धि की छात्राओं की संवेगात्मक परिपक्वता का मध्यमान क्रमशः 87.33 तथा 91.57 तथा मानक विचलन क्रमशः 26.82 तथा 25.65 है। दोनों समूहों के मध्य क्रान्तिक अनुपात 0.51 प्राप्त हुआ, जो कि सार्थक नहीं है। अतः सांख्यिकीय आधार पर कहा जा सकता है कि दोनों वर्गों की छात्राओं की संवेगात्मक परिपक्वता समान है।

आकृति संख्या 5

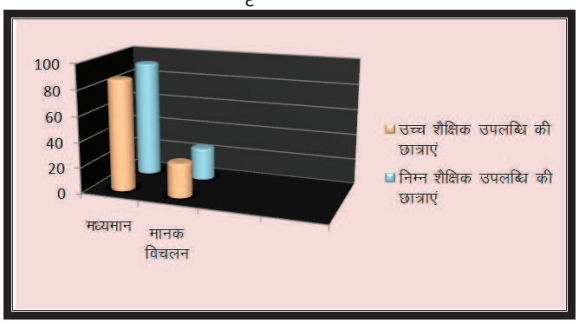

RESEARCH
RECENT EDUCATIONAL & PSYCHOLOGICAL RESEARCHES
Issue : 2 & 3, Vol. : 7, Jul.-Dec. (2018), Joint Edition, Pages : 36 - 40, ISSN 2278 – 5949
गौसिया
International Refereed & Blind Peer-Reviewed Research Journal

मुख्य निष्कर्ष

प्रस्तुत अध्ययन से जो महत्वपूर्ण निष्कर्ष प्राप्त हुए, वे निम्नवत हैं–

- उच्च एवं निम्न शैक्षिक उपलब्धि के विद्यार्थियों की सांवेगिक परिपक्वता में सार्थक अन्तर नहीं पाया गया।
- उच्च शैक्षिक उपलब्धि के छात्र–छात्राओं की सांवेगिक परिपक्वता में सार्थक अन्तर नहीं पाया गया। दोनों समूहों में संवेगात्मक परिपक्वता समान पायी गयी।
- निम्न शैक्षिक उपलब्धि के छात्र–छात्राओं की सांवेगिक परिपक्वता में सार्थक अन्तर नहीं पाया गया। निम्न शैक्षिक उपलब्धि के छात्रों की संवेगात्मक परिपक्वता छात्राओं के समान पायी गयी।
- उच्च एवं निम्न शैक्षिक उपलब्धि के छात्रों की सांवेगिक परिपक्वता में सार्थक अन्तर नहीं पाया गया।
- उच्च एवं निम्न शैक्षिक उपलब्धि की छात्राओं की सांवेगिक परिपक्वता में सार्थक अन्तर नहीं पाया गया।

उपरोक्त निष्कर्ष के आधार पर यह कहा जा सकता कि शैक्षिक उपलब्धि का प्रभाव विद्यार्थियों को सांवेगिक परिपक्वता पर नहीं पड़ता। उच्च तथा निम्न शैक्षिक उपलब्धि के विद्यार्थियों की सांवेगिक परिपक्वता समान होने का कारण संभवतः यह हो सकता है कि विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि में भले ही भिन्नता हो परन्तु विद्यालय व समाज में रहने के कारण उनमें सांवेगिक परिपक्वता समान रूप से पायी जाती है।

शैक्षिक निहितार्थ

आज के छात्र कल का भविष्य हैं। यदि छात्र ही सांवेगिक रूप से परिपक्व नहीं होंगे तो वे एक अच्छे भविष्य निर्माता नहीं बन सकते, यदि हम चाहते है कि छात्र अपने अवांछित संवेगों व नकारात्मक व्यवहारों पर नियन्त्रण रखें तो विद्यार्थियों को नैतिक व मूल्य शिक्षा निश्चित रूप से प्रदान की जानी चाहिये क्योंकि नैतिक एवं मूल्य शिक्षा आज के सांवेगिक अस्थिरता के वातावरण में छात्रों को संवेगात्मक स्थिरता प्रदान करने में सहायक सिद्ध होगी।

संवेगात्मक सुरक्षा बालक के शारीरिक विकास के साथ मानसिक विकास पर भी प्रभाव डालती है। अतः शिक्षा संस्थानों में विद्यार्थियों के लिए योग, प्राणायाम, ध्यान आदि की कक्षाओं का प्रबन्ध करना चाहिये, जिससे विद्यार्थी तनाव से मुक्त होकर स्वस्थ रह सकें तथा अपने संवेगों पर नियन्त्रण रख सकें। विद्यार्थियों को कभी–कभी शैक्षिक भ्रमण, सेमीनार, वर्कशाप पर जाने की व्यवस्था भी करनी चाहिए। जिससे विद्यार्थियों के संवेग सही दिशा की ओर अग्रसर हो सकें।

प्रस्तुत शोध कार्य अभिभावकों, शिक्षकों, निदेशकों, समाज सुधारकों तथा प्रशासकों को एक नवीन दृष्टि दे सकता है जिससे वे बालकों को पूर्ण रूप से समझ सकेंगे तथा एक ऐसे परिवेश का निर्माण करने में सक्षम हो सकेंगें जो बालकों की सांवेगिक परिपक्वता के साथ–साथ शैक्षिक उपलब्धि को बढाने में भी सहायक हों।

सन्दर्भ सूची

- बेस्ट एण्ड कॉन (2003), ''रिसर्च इन एजुकेशन'' प्रेन्टीक हॉल ऑफ इंडिया प्राइवेट लिमिटेड नई दिल्ली।
- बुच, एम0बी0–I II III IV तथा V सर्वे ऑफ रिसर्च इन एजूकेशन, नई दिल्ली एन.सी.ई.आर.टी.।
- कोठारी, सी. आर. (2008) ''रिसर्च मैथडोलॉजी'' न्यू ऐज इण्टरनेशनल पब्लिशर्स।
- कौल, लोकेश (2009), ''शैक्षिक अनुसंधान की कार्यप्रणाली'' विकास प्रकाशन, नोएडा।
- शर्मा, आर0एस0, (2000), ''फंडामेन्टल ऑफ एजुकेशनल रिसर्च'', एल0बी0डी0 पब्लिशर्स एण्ड डिस्ट्रीब्यूटर्स, आर0जी0 कॉलेज रोड, मेरठ।
- सिंह, ए0के0 (2011), ''उच्चतर सामान्य मनोविज्ञान'' पंचम संस्करण, मोतीलाल बनारसीदास, दिल्ली।
- सुलेमान, एम0 (2011), ''मनोविज्ञान शिक्षा एवं अन्य सामाजिक विज्ञानों में सांख्यिकी'' षष्ठम संस्करण, मोतीलाल बनारसी दास, दिल्ली।